अधिगमकर्ता का विकास
एवं
शिक्षण अधिगम प्रक्रिया

DEVELOPMENT OF LEARNER AND TEACHING LEARNING PROCESS

डॉ. कर्ण सिंह

गोविन्द प्रकाशन
लखीमपुर - खीरी

5. छोटे बच्चों के लिए यह सिद्धान्त उपयोगी नहीं है क्योंकि छोटे बच्चों में अधिगम सूझ द्वारा नहीं है बल्कि वे दोहराने, कंठस्थ करने एवं अभ्यास से अधिगम करते हैं।

सूझ सिद्धान्त के शैक्षिक निहितार्थ (Educational Implications of Insight Theory)-

सूझ सिद्धान्त के शैक्षिक निहितार्थ निम्नवत् हैं-

1. यह सिद्धान्त अधिगम के लिए सूझ पर अधिक बल देता है। अतः अधिगम के लिए किसी समस्या को बच्चों के बौद्धिक स्तर के अनुरूप प्रस्तुत करना चाहिए।
2. इस सिद्धान्त के अनुरूप किसी समस्या को बच्चों के समक्ष उसके पूर्ण रूप में ही प्रस्तुत किया जाना चाहिए। तत्पश्चात उसके अंशों का ज्ञान कराकर समग्र ज्ञान देना चाहिए।
3. इस सिद्धान्त के अनुसार बच्चों की आयु, बुद्धि एवं परिपक्वता पर सूझ निर्भर करती है। अतः पाठ्यक्रम के निर्माण में बालकों के बौद्धिक विकास, आयु एवं परिपक्वता को दृष्टिगत रखना चाहिए।
4. इस सिद्धान्त के अनुरूप कक्षा-शिक्षण अधिगम में पुनर्बलन पर विशेष बल दिया जाना चाहिए।
5. इस सिद्धान्त के अनुरूप शिक्षण-अधिगम में अभिप्रेरणा पर विशेष ध्यान देना चाहिए।
6. यह सिद्धान्त गणित सदृश जटिल विषयों के शिक्षण-अधिगम में अधिक लाभप्रद सिद्ध हुआ है।
7. यह सिद्धान्त कला, संगीत, एवं साहित्य की शिक्षा के लिए विशेष उपयोगी है।
8. यह सिद्धान्त बालक को स्वयं खोज करके नवीन ज्ञान अर्जित करने के लिए प्रोत्साहित करता है।
9. यह सिद्धान्त बालक को किसी लक्ष्य की प्राप्ति हेतु उचित व्यवहार की सूझ प्रदान करता है।

5. पुनर्बलन सिद्धान्त
(Reinforcement Theory)

अमेरिका के प्रसिद्ध व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिक सी. एल. हल (C. L. Hull- 1884-1952. A.D.) ने सन् 1915 में अधिगम के पुनर्बलन सिद्धान्त (Reinforcement Theory) का प्रतिपादन किया था, जिसका विस्तृत विवरण सन् 1943 में प्रकाशित उनकी प्रसिद्ध पुस्तक 'प्रिन्सपिल्स आफ़ विहेवियर"[1] (Principles of Behaviour) में मिलता है।

सी. एल. हल

हल का पुनर्बलन सिद्धान्त थॉर्नडाइक (Thorndike) के उद्दीपक अनुक्रिया सिद्धान्त (Stimulus Response Theory) एवं पावलॉव (Pavlove) के अनुबन्धित अनुक्रिया सिद्धान्त (Conditioned Response Theory) पर आधारित है। इस सिद्धान्त को आवश्यकता ह्रास सिद्धान्त (Need Reduction Theory), जैवकीय अनुकूल सिद्धान्त (Biological Adaptation Theory) एवं लक्ष्य प्रवणता सिद्धान्त (Goal Gradient Theory) आदि नामों से भी अभिहित किया गया है।

चूँकि हल एक व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिक थे, जिन्होंने अधिगम की व्याख्या अन्य व्यवहारवादियों से भिन्न रूप में प्रस्तुत की है। उसने अपने अधिगम में पुनर्बलन सिद्धान्त को 17 स्वयंसिद्धों (Postulates) तथा 133 प्रमेयों (Theorems) के आधार पर विवेचना करके प्रस्तुत किया है।

हल ने स्पष्ट किया है कि प्राणी की आवश्यकताएं उसे क्रिया-व्यवहार करने के लिए प्रेरित करती हैं और जो कार्य-व्यवहार प्राणी की आवश्यकताओं को कम करता है, प्राणी उस कार्य-व्यवहार को सीख लेता है। यही अधिगम का आधार है। जैसा कि हल ने लिखा है, "अधिगम आवश्यकता ह्रास की प्रक्रिया के माध्यम

1. "C.L. Hull : *Principles of Behaviour.* Newyork : Appleton Century. 1943

से सम्पन्न होता है।''[1]

हल के पुनर्बलन सिद्धान्त का स्पष्टीकरण (Explanation of Hull's Reinforcement Theory)-

हल के पुनर्बलन सिद्धान्त को थॉर्नडाइक के प्रयोग के माध्यम से स्पष्ट किया गया है। एक भूखी बिल्ली पिंजड़े में बन्द है और पिंजड़े के बाहर भोजन रखा हुआ। पिंजड़े का दरवाज़ा एक बटन/खटके के दबने से खुलता है। अपनी भूख को संतुष्ट करने के लिए बिल्ली क्रियाशील होती है क्योंकि दृष्टिगत भोजन उसमें क्रियाशीलता को बल प्रदान करता है अर्थात् उसे पुनर्बलित (reinforce) करता है। अत: वह पिंजड़े से बाहर निकलने के लिए विभिन्न अनुक्रियाएं करती हैं। इसी क्रम में अनुक्रियाएं करते हुए वह बटन/खटके को दबाकर बाहर निकलना और भोजन प्राप्त करना सीख जाती है। इससे उसकी आवश्यकता को संतुष्टि मिलती है अर्थात् उसकी आवश्यकता में कमी आती है। इसीलिए हल के पुनर्बलन सिद्धान्त को अधिगम का आवश्यकता ह्रास सिद्धान्त (Need Reduction Theory of Learning) कहा जाता है।

पुनर्बलन सिद्धान्त की विशेषताएं (Characteristics of Reinforcement Theory)-

हल के अधिगम के पुनर्बलन सिद्धान्त की निम्नलिखित विशेषताएं हैं-

1. यह सिद्धान्त उद्दीपक अनुक्रिया सिद्धान्त पर आधारित है और इसमें पुनर्बलन पर अधिक बल दिया गया है, जो अधिगम के लिए आवश्यक है।
2. यह सिद्धान्त प्राणी की आवश्यकताओं और उनकी संतुष्टि पर अधिक बल देता है।
3. पुनर्बलन सिद्धान्त यह प्रतिपादित करता है कि जो अनुक्रिया आवश्यकता पूर्ति के ठीक पूर्व सम्पादित होती है, वह सीख ली जाती है।
4. इस सिद्धान्त की सहायता से सामाजिक व्यवहारों की व्याख्या की जा सकती है।
5. यह सिद्धान्त मानव-अधिगम की सम्यक् व्याख्या करने में सक्षम है।

पुनर्बलन सिद्धान्त की सीमाएं (Limitations of Reinforcement Theory)-

पुनर्बलन सिद्धान्त की सीमाएं निम्नलिखित हैं-

1. यह सिद्धान्त स्वयं में मौलिक सिद्धान्त नहीं है।
2. इसमें थॉर्नडाइक द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त की व्याख्या नये रूप में की गई है।
3. चूँकि यह प्रयोग बिल्ली पर आधारित है। अत: यह मनुष्य के अधिगम की स्पष्ट व्याख्या नहीं करता है।

पुनर्बलन सिद्धान्त के शैक्षिक निहितार्थ (Educational Implications of Reinforcement Theory)-

हल के पुनर्बलन सिद्धान्त के शैक्षिक निहितार्थ निम्नलिखित हैं-

1. इस सिद्धान्त के अनुसार अधिगम के लिए पुनर्बलन आवश्यक है। इसीलिए शिक्षण-अधिगम में पुनर्बलन पर अधिक बल दिया जाता है।
2. यह सिद्धान्त बालकों की आवश्यकताओं की संतुष्टि/कमी पर बल देता है। इसीलिए शिक्षण-अधिगम-प्रक्रिया में बालक की आवश्यकताओं पर विशेष ध्यान दिया जाता है और उनकी पूर्ति हेतु प्रयास किया जाता है।
3. यह सिद्धान्त शिक्षण-अधिगम में बालकों के लिए अभिप्रेरणा पर अधिक बल देता है ताकि उन्हें अभिप्रेरित करके उनकी ज्ञान प्राप्त करने की आवश्यकता की पूर्ति की जा सके।
4. यह सिद्धान्त बालकों की अनुक्रियाओं एवं आवश्यकताओं में सम्बन्ध स्थापित करने पर बल देता है। अत: उनकी आवश्यकताओं एवं अनुक्रियाओं के दृष्टिगत पाठ्यक्रम का निर्माण किया जाता है।

---

1. "Learning takes place through a process of need reduction." C.L. Hull, Quated by E. Stones: *An Introduction of Educational Psychology*. P. 58.